अपनी छोटी बहन को पत्र लिखकर बताइए कि उसे ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग कैसे करना चाहिए।

ए ५/५२, मोती नगर,
नई दिल्ली–१५
दिनांक... ...

प्रिय नीरजा,

प्यार।

कल तुम्हारा स्नेह–भरा पत्र मिला। तुमने लिखा है कि तुम्हारे विद्यालय में १५ मई से ग्रीष्मावकाश हो रहे हैं। पूज्य पिताजी के पत्र से मुझे यह तो मालूम हो चुका है कि इस बार गरमियों में कहीं पहाड़ पर जाने का कोई कार्यक्रम नहीं है। तुम्हें याद होगा कि पिछली बार हम सबने मिलकर मसूरी में कितने आनंद से छुट्टियाँ बिताई थीं। इस बार मैं भी कहीं नहीं जा रही हूँ। यद्यपि कॉलेज की ओर से कुछ लड़कियों को बाहर ले जाने का कार्यक्रम है, पर अंतिम वर्ष होने के कारण मैं इस बार यहीं रहकर कुछ अध्ययन करना चाहती हूँ।

प्रिय नीर, तुम तो जानती हो कि समय बहुत कीमती वस्तु है। गया हुआ वक्त लौटकर नहीं आता। तुम्हारा भी अंतिम वर्ष है। मेरी राय है कि इन छुट्टियों में तुम भी मन लगाकर अपने पाठ्यक्रम की कुछ पुस्तकें पढ़ लो, ताकि अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होकर किसी अच्छी संस्था में प्रवेश पा सको। छुट्टियों में तुम्हें बहुत–सा समय खाली मिलेगा। इसीलिए मैं दो पुस्तकें—एक गृह विज्ञान की और दूसरी अर्थशास्त्र की—तुम्हारे लिए भेज रही हूँ। तुम अपना समय विभाजन करके सभी विषयों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करो।

लिखने के काम पर विशेष ध्यान दो। हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तुम्हारी लिखाई ठीक होनी चाहिए। पढ़ाई से जो समय बचे उसे घर के काम में लगाकर माताजी का हाथ बँटाओ। इन छुट्टियों में सैर करने और खेलने के लिए भी कुछ समय अवश्य निकालो, ताकि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहे। मैं बिलकुल ठीक हूँ।

पम्मी से कहना कि उसने जो पुस्तकें माँगी हैं, मैं डाक से भेज दूँगी।

पूज्य माताजी व पिताजी को मेरा प्रणाम, मुन्ना को प्यार।

प्यार सहित,

तुम्हारी दीदी
मीनाक्षी